साठोत्तरी नागपुरी पद्य साहित्य में लोक चेतना : एक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ. बीरेंद्र कुमार सोय
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

शोधार्थी

निलोफर मिंज
यू.जी.सी. नेट / जे.आर.एफ. उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

भूमिका

झारखंड में जनसम्पर्क की सर्व प्रमुख भाषा नागपुरी है। नागपुरी भाषा जितनी प्रसिद्ध है उतनी ही प्रसिद्ध इसका साहित्य है। नागपुरी साहित्य से झारखंड के अन्य भाषा साहित्य के साथ–साथ अन्य राज्य व भाषा साहित्य के लोग प्रेम करते हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हर जगह नागपुरी को स्थान दिया जाता है। नागपुरी साहित्य के इतिहास को देखें तो यह नागवंश और रामगढ़ राज्य की राजभाषा थी। नागवंशी राजा रघुनाथ शाह और रामगढ़ के राजा दलेल सिंह खुद नागपुरी साहित्य के रचनाकार थे। नागपुरी के लिए कैथी लिपि या देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है। रघुनाथ नृपति को नागपुरी का प्रथम कवि माना जाता है। बाद में हनुमान सिंह, सोबरन साय, जय गोविन्द, संत घासी, घासीराम, कंचन, धनीराम बक्शी, फादर पीटर शांति नवरंगी, शारदा प्रसाद सिन्हा, प्रफुल्ल चंद्र राय, डॉ.बी. पी. केशरी, सहनी उपेंद्र पाल नहन, नईमुद्दीन मिरदाहा, लाल रणविजय नाथ शाहदेव, मधु मंसूरी हँसमुख, मुकुंद नायक, प्रमोद कुमार राय, कृष्ण प्रसाद साहू, गिरधारी राम गोंझू, कृष्ण कलाधर आदि लेखकों ने रघुनाथ नृपति के विचार को आगे बढ़ाया। नागपुरी के लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य विकसित अवस्था में है। नागपुरी भाषा में काव्यों की रचना 17वीं शताब्दी में शुरू हुई। नागवंशी राजाओं और रामगढ़ के राजाओं के शासनकाल के दौरान देवनागरी और कैथी लिपि में कई नागपुरी गीत लिखी गई। नागवंशी राजाओं में से कई राजा कवि, लेखक और रचनाकार रहे हैं। नागवंशी राजा रघुनाथ शाह एक कवि और रामगढ़ के राजा दलेल सिंह एक रचनाकार थे। हनुमान सिंह, जयगोविंद मिश्र, बरजू राम, महाकवि घासी राम और दास महली नागपुरी के रचनाकार रहे हैं। बेनीराम मेहता द्वारा लिखित नागवंशावली एक ऐतिहासिक कृति है। महाकवि घासीराम द्वारा लिखित वंशावली,

दुर्गासप्तशती, बरहामासा, विवाह परिछन आदि प्रमुख है। प्रद्युम्न दास और रुद्र सिंह भी प्रमुख लेखक रहे हैं। डॉ बी. पी. केशरी नागपुरी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। नागपुरी में विभिन्न गीत कविताएं लिखी जा चुकी है एवं लिखी जा रही है। दिनों दिन नागपुरी साहित्य समृद्ध होता जा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि नागपुरी में सिर्फ गीत, रीझ रंग के लिए नहीं लिखे गए बल्कि लोक चेतना हेतु भी कई गीत–कविता की रचना की गयी एवं नए–नए लेखक, कवि निरंतर लिख रहे हैं एवं प्रकाशित कर रहे हैं। नागपुरी के लोक चेतना संबंधी गीतों को जानने से पूर्व हम इस बात को जानें कि साहित्य में लोक चेतना क्या है?

साहित्य की लोक चेतना उतनी प्राचीन है जितना आदि मानव। उसमें रागात्मक पक्ष उसे मुख्य बनाता है। ग्रामीणों के पर्व, त्योहार, आचार–विचार, रिश्ते, जीवनमूल्य आदि को उन्हीं की बोली में अभिव्यक्ति मिलती है। उनके भाव और भाषा में अपनी मिट्टी की सुगन्ध आती है। उसमें मन की जड़ता को दूर करने की अपूर्व क्षमता होती है। वह बौद्धिक वजन का साहित्य नहीं है। वह मौखिक और जीवंत परंपरा का हिस्सा है। वह, असल में एक अमुक व्यक्ति की भावाभिव्यक्ति नहीं है वरन् लोक की भावाभिव्यक्ति का आईना है। वह समाज की धरोहर है। पूराने समाज की घड़कन और स्पन्दन उसको सप्राण बनाती हैं। सामाजिक–पारिवारिक मूल्य ही उसकी जैव खाद है। लोक साहित्य मानवीय रिश्तों को मधुर बनाता है। भोले–भाले आदमियों के अरमानों को मजबूत बनाता है। बहुजन सुखाय बहुजन हिताय के लक्ष्य की पूर्ति करता है। तुलसी दास की उक्ति गावहि मंजुल बानी, सुनि कलरव मंगल बानी में उसका सन्देश निहित है।

साठोत्तरी नागपुरी कविता में लोक चेतना विषय से जुड़कर कुछ मुद्दे साहित्यकार और आस्वादकों के सामने एक चुनौती के रूप में उभर कर आते हैं। विज्ञान और तकनीकी के युग में क्या यह चेतना नष्टप्राय होती जा रही है? क्या वह धारा

आज चुनौतियों का सामना कर रही है? क्या वह एक पूरक तत्व है या विरोधी? क्या विश्वग्राम का वैचारिक पहलू हमारी लोकचेतना को झकझोर डालेगी या साथ लेकर चलेगी? क्या आज के युग में साहित्य की लोकचेतना केवल संग्रहालय की वस्तु बनकर रह गई है? क्या वह आस्था और जीवनमूल्य का अटूट हिस्सा है? साहित्यकार उसको बिकाऊ चीज के रूप में मानते हैं या टिकाऊ? केवल दिमागी कसरत के रूप में लोकचेतना को साहित्य में जगह देती है तो उसमें ऊर्जा और उन्मेष की गुंजाइश न रहेगी।

साहित्य की लोकचेतना की अपनी खूबियाँ अवश्य होती हैं। पतन के पड़ाव पर पहुँचने के अवसर पर साहित्य की कमजोर विधाओं के शक्तिकरण के बारे में सक्रिय सतर्क चर्चाएं सबल बन जाती हैं। यह साहित्य की लोकचेतना के लिए भी लागू होती है। शुरू में ही यह संकेत देना उचित होगा कि हमारी समाज में लोक शब्द के अर्थ की कई छवियाँ हैं। उसको विशेषण के रूप में रखकर कई शब्द प्रचलित हैं— जैसे लोकगीत, लोककथा, लोकभाषा, लोकवाणी, लोकमत, लोकतंत्र, लोकजीवन, लोकप्रियता। लोकचेतना के पोषक तत्वों की तलाश भी आज अनुसंधान का विषय है। नेतृत्व विज्ञान, समाज विज्ञान, मिथक, आदिबिंब आदि उनमें शामिल हैं। लोक साहित्य को पहले दूर—दराज के गाँवों के निरक्षरों के जीवन निरीक्षण के नमूने के रूप में समाज ने मान लिया था। लेकिन आज वह विशेषज्ञों के लिए गहन अध्ययन की विधा बन गई है। नव उपनिवेशवाद, उत्तराधुनिकता और भूमंडलीकरण की चकाचौंध आज साहित्य की सहजता को प्रदूषित कर रही है। नाना प्रकार की व्यस्तताएं जीवन को यांत्रिक बना रही है। दिल को दिल्लगी मिलने के क्षण कम हो रहे हैं। इसलिए लोकचेतना की धड़कन आज की कविता में अधिक अनुभूत नहीं होती। फिर पाठकीय अभिरुचि भी उस ओर अधिक उन्मुख नहीं है। आलोचकों के इन निष्कर्षों को एकदम बेबुनियाद ठहराना भी ठीक नहीं लगता। विघ्न— बाधाएं आ जाना और प्रवृत्तियों का रूक जाना अलग—अलग बातें हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने सहज अभिरुचि

को दांव पर रखकर रास्ते से न हटने वाले कुछ कवि आज भी रचना रत हैं। इनकी एकलव्य साधना को महत्व और प्रोत्साहन देना सहृदय पाठकों का दायित्व है। लोक संपृक्ति से कविता अधिक प्राणवान होगी। लोकानुराग की रचनाएं हमारी अभिरुचियों का परिमार्जन कर सकती हैं। मानवीय संबंधों को मधुर बनाने में भी वह सहायक निकलेगी। संस्कृति और मूल्यों की जड़ें तब अधिक मजबूत बन जाएंगी। रासायनिक खादों से साहित्य को बचाने की मांग आज अधिक सख्त बन रही हैं। निज संस्कृति को बचाने से ही निज भाषा की उन्नति संभव होगी। वह चेतना विकास की विराट प्रक्रिया है। आशा है कि इस प्रकार की विचारगोष्ठी या सहृदय संवादों के फलस्वरूप नए सिरे से सोचने की प्रेरणा भी हमें मिलेगी। तब साहित्य की लोकचेतना को प्रौद्योगिकी के इस युग में अहल्या मोक्ष मिलेगा। उपभोक्ता संस्कृति के विश्वग्राम में तब हमारे ग्राम की आवाज स्पष्ट सुनाई पड़ेगी। लोक काव्य के लिए आज अलग विधा और विधान नहीं है। वर्तमान युग को प्रवृत्तियों के साथ लोकचेतना घुल मिल जाती है। आज की कविता से लोकचेतना को पृथक करके देखना मुश्किल है। इसी कड़ी में नागपुरी के कुछ कविता एवं गीत को देखें जो इस बात की वकालत करती हैं कि नागपुरी में लोक चेतना संबंधी साहित्य सृजन की आवश्यकता है और जैसे युग में अनावश्यक विचार का प्रवेश हो रहा है कहीं न कहीं हमारा साहित्य ही उसे सही रास्ता पर ले जा सकता है। नागपुरी के इन गीतों को देखें–

मनुष जनम पाय,
मति रहू मटियाय,

धीरे-धीरे दिन बीती जाय।

कइसे जीयब हाय,
आब कोनो करू तो उपाय ।।

उक्त गीत को नागपुरी कवि प्रमोद कुमार राय ने लिखा है, जिसमें वे सदैव प्रयासरत रहने की प्रेरणा दे रहे हैं। निश्चित तौर पर मानव इस बात पर विचार करता है कि अब मेरे पास करने को कुछ नहीं बचा है किन्तु यह सत्य नहीं है। जीवन के अंतिम क्षण तक आप के पास कुछ न कुछ कार्य है अतः हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए जीवन भर गतिशील रहना आवश्यक है। ठीक इसी प्रकार नागपुरी में गीत कविताओं को भंडार– सा भरा है। जिसमें छिपे ज्ञान की प्राप्ति के समाज को इसपर शोध करना चाहिए। साठोत्तरी नागपुरी पद्य साहित्य में लोक चेतना एक अध्ययन विषय लोक चेतना संबंधी गीत कविताओं में निहित ज्ञान को समाज के सामने लाने का प्रयास करेगा।

प्रेरणा

झारखंड में सबसे अधिक नागपुरी भाषा बोली जाती है। भाषा के साथ–साथ नागपुरी भाषा में गीत भी समस्त झारखंड में गाई और सुनी जाती है। ग्रामीण क्षेत्र में शादी–विवाह, पर्व–त्योहार आदि में नागपुरी के विभिन्न राग– रागिनी के गीत गए जाते हैं। इसी क्रम में मैंने शादी के गीत सुने जिसे, डमकच राग में गया जा रहा था। तब ही मैंने अन्य लोगों से इसके अर्थ पुछे तो उन्होंने उस गीत के बहुत ही सुंदर भाव और लोगों में प्रेरणा भर देने वाले गीत के अर्थ को बताया। तब ही मेरे अंतर्मन में नागपुरी भाषा साहित्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई ।

इस कार्य को पुख्ता रूप देने के लिए मैंने तत्कालीन जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग नागपुरी, वर्तमान में नागपुरी भाषा विभाग है, से शोध कार्य करने की प्रेरणा मिली। नागपुरी में अध्ययन के दौरान नागपुरी के भाषा साहित्य को और भी बेहतर तरीके से जानने का अवसर मिला।

मेरे पूज्य गुरुजन, आदरणीय डॉ. हरि उरांव समन्वयक जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय, डॉ. सविता केशरी विभागाध्यक्ष, नागपुरी विभाग, डॉ. उमेश नन्द तिवारी सहायक प्राध्यापक, नागपुरी विभाग एवं मेरे शोध निर्देशक डॉ. बीरेंद्र कुमार सोय, सहायक प्राध्यापक मुण्डारी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची ने मुझे इस शोध कार्य के लिए प्रेरित किया।

परिकल्पना

प्रत्येक अनुसंधान का आधार परिकल्पना ही होती है। वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना ही होती है। वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना के अभाव में संभव नहीं

है। परिकल्पना का तात्पर्य पूर्ण चिंतन से है। अर्थात् किसी समस्या के हल के बारे में पहले से अनुमान लगाना ही परिकल्पना होती है। समकालीन नागपुरी गीत कविताओं में निहित ज्ञान को जानने के साथ–साथ नागपुरी भाषा एवं साहित्य के उद्भव एवं विकास को शोध के समक्ष प्रस्तुत करना एवं बदलते हुए स्वरूप को जानने का प्रयास होगा ।

शोध का उद्देश्य –

1. नागपुरी साहित्य में अनुसंधान के द्वारा साहित्य के प्रति अभिरुचि का विकास करना एवं साहित्य को विकास की ओर ले जाना।
2. नागपुरी साहित्य में अनुसंधान द्वारा संपन्न एवं समृद्ध बनाना।
3. नागपुरी व्यंजना अलंकार प्रादेशिक छवियों आदि का उद्घाटन करना।
4. नागपुरी साहित्य की मूल प्रकृति का पता लगाना एवं उसे समाज के सामने प्रस्तुत करना ताकि आने वाली पीढ़ी उस मूल प्रकृति से भिन्न न जा सके।
5. नागपुरी गीत–कविताओं में लोक चेतना के नए आयामों को जानना।
6. नागपुरी साहित्य में साहित्यिक समस्याओं का विश्लेषण करना।
7. नागपुरी साहित्य का अध्ययन से बड़ी मात्रा में सामग्री इकट्ठा करना एवं साहित्य के अध्ययन के द्वारा उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति करना ।
8. नागपुरी साहित्य का अध्ययन कर उसकी संस्कृति को जानना एवं अन्य साहित्य में सांस्कृतिक आदान प्रदान करना।

शोध विधि –

निम्नलिखित विधियों के द्वारा शोध कार्य किया जा सकता है –

1. अवलोकन विधि ।
2. साक्षात्कार विधि ।
3. प्रश्नावली विधि ।
4. तुलनात्मक विधि ।
5. विश्लेषणात्मक विधि ।

उपकरण –

निम्नलिखित सामग्री शोध के लिए उपयोग किये जा सकते हैं –

1. शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएँ, संदर्भ ग्रन्थ हेतु पुस्तकें।
2. पत्र–पत्रिकाएँ जैसे– गोतिया, जोहार, डहर, जोहार झारखण्ड, संगम, आज नागपुरी समाचार इत्यादि ।
3. टेप रिकॉर्डर (साक्षात्कार, सभा आदि के लिए जरूरत)
4. कैमरा (आवश्यक चित्रों को एकत्रित करने, फोटो खिंचने एवं विडियो वगैरह तैयार करने के लिए आवश्यक)
5. मोबाइल
6. कम्प्यूटर
7. इंटरनेट
8. नक्शा, पेपर इत्यादि ।

शोध की प्रासंगिकता

आज का युग आधुनिक युग है। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जो प्रगति हो रही है। उससे आज का विश्व छोटा होता जा रहा है आज हम भौगोलिक सीमाओं को

पार करते हुए वृहत्तर संबंधों को जोड़ रहे हैं, इससे व्यक्ति के समग्र ज्ञान का क्षितिज विस्तृत हो रहा है और उसका संबंध अन्य भाषा–भाषी समुदायों से जुड़ रहा है, जो वसुधैव कुटुंबकम अर्थात विश्व बंधुत्व की भावना पैदा करने में सहायक है, इसके साथ–साथ ज्ञान के विश्वव्यापी प्रसार से मानव चेतना के नए आयामों में विस्तार आया है। वह सारी सीमाओं को लाँघते हुए हम यह अनुभव करते हैं कि अपनी भाषा से किसी भाषा की तुलना होने का अर्थ है– तीसरी आंख या तीसरे कान का होना या तीसरी आंख या तीसरे कान की उपलब्धि तुलना से ही संभव है जो हमें अन्य भाषाओं में ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे कार्य का परिचय देता है।

पूर्व अध्ययन और अनुसंधान –

1. नागपुरी भाषा साहित्य निम्नलिखित शोध कार्य सम्पन्न हो चुका है –
2. डॉ० कुमारी बंसती नागपुरी गीतों में छंद रचना शोध निर्देशक डॉ० विसेश्वर प्रसाद केशरी–1987
3. डॉ० मजूला कुमारी कुडुख तथा नागपुरी का तुलनात्मक अध्ययन शोध निर्देशक – डॉ० गिरधारी राम गौझु–1998
4. डॉ० समरिता कुमारी कविरत्न शारदा प्रसाद शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व शोध निर्देशक डॉ० गिरिधारी राम गौंझू, 2005
5. डॉ० पुनम सिंह चौहान नागपुरी साहित्य में नारी की संकल्पना शोध निर्देशक डॉ० कुमारी बंसती 2007

शोध कार्य की रूप रेखा

भूमिका

शोध की प्रेरणा और औचित्य

शोध की विषय सीमा

शोध विधि

शोध से संबंधित लिखित भाषा साहित्य का परिचय

प्रथम अध्याय – पद्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय

(क) पद्य साहित्य का परिचय

(ख) पद्य विधाओं का परिचय

(ग) पद्य और गद्य में अंतर

द्वितीय अध्याय – नागपुरी साहित्य का संक्षिप्त परिचय

(क) नागपुरी साहित्य की पृष्ठभूमि

(ख) नागपुरी पद्य का प्रारंभिक रूप और तत्कालीन परिस्थितियों

(ग) नागपुरी पद्य विकास के विभिन्न चरण

(घ) सन् 1960 ई. के पूर्व नागपुरी पद्य विकास की विभिन्न समस्याएँ

तृतीय अध्याय – सन् 1960 ई. का नागपुरी पद्य साहित्य में महत्व

(क) ऐतिहासिक महत्व

(ख) नागपुरी पद्य साहित्य पर 1960 ई. का प्रभाव

(ङ) हिन्दी साहित्य का प्रभाव

(च) उड़ीया साहित्य का प्रभाव

(छ) बांग्ला साहित्य का प्रभाव

(ज) नई पहचान की खोज

चतुर्थ अध्याय – साठोत्तरी नागपुरी पद्य साहित्य के तथ्य

(क) साठोत्तरी नागपुरी पद्य में नवचेतना का विकास

(ख) साठोत्तरी नागपुरी पद्य विकास के विभिन चरण

(ग) नई भावभूमि और नया परिवेश

(घ) अन्य साहित्य से प्रेरणा

(ङ) नया सौंदर्य बोध एवं यथार्थ का सतही बयान

(च) साठ के बाद पद्य साहित्य में सृजनात्मक झुकाव

(छ) सांस्कृतिक और राजनैतिक प्रभाव

पंचम अध्याय – साठोत्तरी नागपुरी पद्य साहित्य की रचना सामग्री

(क) लोक गीत संग्रह

(ख) गीत संग्रह

(ग) कविता संग्रह

(घ) नागपुरी पद्य की अन्य विधाएँ

(ङ) भावपक्ष और कलापक्ष

षष्ठ अध्याय – साठोत्तरी नागपुरी पद्य साहित्य की भावगत प्रवृत्ति

(क) सांस्कृतिक नव जागरण

(ख) अस्मिता बोध

(ग) ग्राम दर्शन

(घ) आदर्शवाद

(ङ) प्रगतिवाद

(च) सामाजिक यथार्थवाद

(छ) राष्ट्रीय चेतना

(ज) राजनीतिक जागरूकता

सप्तम अध्याय – साठोतरी नागपुरी पद्य साहित्य की भाषा शैली

(क) शैली अर्थ और परिभाषा

(ख) शैली के गुण

(ग) शैली के दोष

(घ) प्रतिक

(ङ) बिम्ब

(च) अलंकार

(छ) छंद

निष्कर्ष / उपसंहार / मूल्यांकन

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथों की सूची

2 सन्दर्भ ग्रंथों की सूची

3. पत्र–पत्रिकाओं की सूची

4. साक्षात्कार की सूची

5. चित्रावली

नोट– आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डॉ. बीरेंद्र कुमार सोय
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

शोधार्थी

निलोफर मिंज
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

आधार ग्रंथों की सूची

लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1) अनुज, डॉ. भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	जय भारती-इलाहाबाद	1992
2) कलाधर, कृष्ण	लोपाई छंद	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, रांची	2011
3) केशरी डॉ. विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा उद्गम और विकास	झारखण्ड झरोखा, रांची	2006
4) केशरी डॉ. विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी कवि और उनका काव्य	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, रांची	2014
5) केशरी डॉ. विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा और साहित्य	कमल प्रकाशन, रांची	1971
6) कुमारी, पुनम	अर्जुन कर तीर	एजुकेशनल बुक सर्विस, दिल्ली	2022
7) गोस्वामी, डॉ. श्रवण कुमार	नागपुरी शिष्ट साहित्य	रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंस	1972
8) गोस्वामी, डॉ. श्रवण कुमार	नागपुरी भाषा	बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्- पटना	1976
9) तिवारी, पार्थ नन्द	प्रनामी	झारखण्ड झरोखा, रांची	2015
10) पागल, अशोक	शकुन्तला (नाटकीय एकालाप)	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, रांची	2007
11) बड़ाईक, डॉ.	अशोक कुमार आब मांदर बाजी	पृथ्वी प्रकाशन दिल्ली	2016
12) महतो, युगेश कुमार	नागपुरी विवाह गीत	प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन	2018

13) वर्मा, धीरेन्द्र लोक साहित्य की भूमिका साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद 2013

14) विधि ज्ञानोत्तम नागपुरी कर साहित्यिक निबंध झारखण्ड झरोखा, रांची 2012

15) राय, प्रमोद कुमार मनमीत झारखण्ड झरोखा, रांधी 2016

16) शुक्ल आचार्य रामचंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास कमल प्रकाशन नगरी प्रचारिणी सभा

संवत 2035

सन्दर्भ ग्रंथों की सूची

लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1) कुमार, अरविन्द	खोरठा एवं नागपुरी भाषा का तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	झारखण्ड झरोखा, रांची	2013
2) तिवारी, योगेन्द्र नाथ	नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय	योग प्रकाशन, रांची	1970
3) नवरंगी, पीटर शांति	ए सिंपल सदनी ग्रामर	रांची	1956
4) नवरंगी, पीटर शांति	नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण	रांची	1965
5) विधि, ज्ञानोत्तम	ग्लोबल गाँव कर देवता	झारखण्ड झरोखा, रांची	2012
6) शाहदेव, लाल अजय	नागपुरी तथा छतीसगढ़ी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन	झारखण्ड झरोखा,	शोध प्रबंध

पत्र-पत्रिकाओं की सूची -

पत्र-पत्रिकाओं का नाम	अवधी	प्रकाशन स्थान
1. आदिवासी	साप्ताहिक	रांची

2. आदिवासी सकाम	साप्ताहिक	जमशेदपुर
3. गोतिया	साप्ताहिक	टूमसा टोली चुटिया,रांची
4. झारखण्ड समाचार	साप्ताहिक	रांची
5. नागपुरी	मासिक	रांची
6. शंखनाद	त्रैमासिक	सिमडेगा
7. पझरा	अनियमित कालीन	रांची
8. जय झारखण्ड	त्रैमासिक	डाल्टनगंज